पौध रोपण

लगभग 16 माह पुरानी पौध वृक्षारोपण हेतु उपयुक्त होती है। पौध रोपण माह जुलाई में 3मी0 X 3मी0 की दूरी पर खुले स्थान में करना चाहिए।

समयबद्ध कार्यक्रम

क्र0 स0	कार्य	वर्ष	माह
	बीज द्वारा पौध तैयार करना		
1	स्वस्थ पौधों का चयन	–	वर्षाकाल
2	स्वस्थ व रोगमुक्त पौधों से बीज एकत्रीकरण	प्रथम वर्ष	अक्टूबर प्रथम पक्ष
3	शेड हाउस में बीज बुआई	द्वितीय वर्ष	फरवरी द्वितीय पक्ष
4	अंकुरित पौधों का पॉली बैग में प्रत्यारोपण	द्वितीय वर्ष	जुलाई
5	पौध का रखरखाव	द्वितीय वर्ष	–
6	रोपण	तृतीय वर्ष	जुलाई

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

1– मुख्य वन संरक्षक, जैव विविधता संरक्षण, विकास एवं अनुसंधान
मो0– 9412076135, 05946–234047
2– वन संरक्षक , अनुसंधान वृत्त हल्द्वानी
मो0 9458192126, 0596–235136
3– वन वर्धनिक, पर्वतीय, उत्तराखण्ड, नैनीताल
मो0 09458192184, 05942–236270

अनुसंधान पत्रक 4/2013-14

पटवा
(Meizotropis pellita)

पौध उत्पादन प्राविधि

वन वर्धनिक, उत्तराखण्ड, नैनीताल
उत्तराखण्ड वानिकी अनुसंधान संस्थान, हल्द्वानी
वन विभाग, उत्तराखण्ड

पटवा
(Meizotropis pellita)

परिचय

पटवा फैबेसी कुल की महत्वपूर्ण एवं पटवाडांगर (नैनीताल), काली कुमाऊँ (चम्पावत) व समीपस्थ क्षेत्रों की स्थानिक झाड़ी प्रजाति है जो वर्तमान में संरक्षण के अभाव में दुर्लभ एवं संकटापन्न हो गयी है। यह शुश्क पहाडी एवं खुले चीड वनो में लगभग 1400 मी0 की ऊँचाई पर पाया जाता है। इसकी जड़े बहुवर्षीय होती हैं किन्तु शाखायें वार्षिक रुप से माह अप्रेल–मई में निकलती है एवं शीतकाल में सुशुप्त हो जाती है। इसकी जड़े मृदा में बहुत नीचे तक जाती है तथा मृदा संरक्षण में सहायक होती है। इसमें पुष्पण जून में होता है तथा फलियॉ सितम्बर–अक्टूबर में परिपक्व होती हैं।

प्रवर्धन प्राविधि

पटवा का प्रवर्धन बीज द्वारा सरलता से किया जा सकता है। रूट सकर्स द्वारा भी इसका प्रवर्धन किया जा सकता है।

वर्धी प्रवर्धन (रूट सकर्स द्वारा पौध तैयार करना)

पटवा का वर्धी विधि द्वारा प्रवर्धन करने के लिए माह फरवरी में रूट सकर्स एकत्र किया जाता है तथा खुली क्यारी में मिट्टी में 3–5 सेमी0 गहराई में दबा देते है। रूट सकर्स द्वारा प्ररोहफुटन प्राप्त होने में लगभग 3 से 4 माह का समय लगता है। इस प्रकार रूट सकर्स से 15–20 प्रतिशत सफलता प्राप्त होती है।

बीज द्वारा पौध तैयार करना

उच्च गुणवत्ता के बीज को प्राप्त करने लिए सर्वप्रथम स्वस्थ व रोगमुक्त पौधों का चयन किया जाता है तथा इन्हीं पौधों से बीज एकत्र किया जाना चाहिए। माह अक्टूबर प्रथम पक्ष में परिपक्व फलियों को एकत्र करते हैं तथा फलियों को 10–15 दिन सुखाने के उपरांत बीज अलग कर एकत्र कर लेते हैं। माह फरवरी द्वितीय पक्ष में बीज की बुआई 12 घण्टे पानी में भिगाने के पश्चात शेड–नेट में जर्मिनेशन ट्रे में बालू+कम्पोस्ट (2:1) में करते है। बुआई का कार्य लाइन में करना चाहिए तथा बुआई के पश्चात नियमित सिंचाई करनी चाहिए किन्तु पानी की मात्रा अधिक अधिक होने पर अंकुरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। बीज का अंकुरण 15–20 दिनो में प्रारम्भ हो जाता है तथा 70 दिनों में लगभग 85 प्रतिशत अंकुरण प्राप्त होता है।

पौध प्रत्यारोपण

अंकुरित पौधो का प्रत्यारोपण माह जुलाई में करना चाहिए जब उसमें कम से कम 3–4 पत्तियॉ आ जाय। प्रत्यारोण हेतु पौधों को सावधानीपूर्वक जर्मीनेशन–ट्रे से निकालना चाहिए जिससे जड़े क्षतिग्रस्त न हों तथा प्रत्यारोपण के समय पौधो को कालर के बजाय पत्ते से पकड़ना चाहिए। प्रत्यारोपण 9"x 6" के पॉलीबैग में शेड हाउस में करने पर अच्छा परिणाम प्राप्त होता है। पॉटिंग मीडियम मिट्टी+वर्मीकम्पोस्ट (2:1) उपयुक्त पाया गया है। पौधों में नियमित रूप से सिंचाई करनी चाहिए।